موضوع الخطبة: الإيمان بوجود الله

الخطيب : فضيلة الشيخ ماجد بن سليمان الرسي/حفظه الله

لغة الترجمة: الأردو

المترجم : فيض الرحمن التيمي (@Ghiras_4T)

उपदेश का शीर्षक:

अल्लाह तआ़ला के अस्तित्व पर ईमान

إن الحمد لله، نحمده ونستعينه،ونعوذ بالله من شرور أنفسنا ومن سيئات أعمالنا،من يهده الله فلا مضل له،ومن يضلل فلا هادي له،وأشهد أن لا إله إلا الله وحده لا شريك له وأشهد أن محمدا عبده ورسوله.

(يا أيها الذين آمنوا اتقوا الله حق تقاته ولا تموتن إلا وانتم المسلمون)

(يا أيها الناس اتقوا ربكم الذي خلقكم من نفس واحدة وخلق منها زوجها وبث منهما رجالا كثيرا ونساء واتقوا الله الذي يتسائلون به والارحام إن الله كان عليكم رقيبا)

(يا أيها الذين آمنوا اتقوا الله وقولوا قولا سديدا يصلح لكم اعمالكم ويغفر لكم ذنوبكم ومن يطع الله ورسوله فقد فاز فوزا عظيما)

अल्लाह की प्रशंसा और उस के नबी ﷺ पर दरूदो सलाम के बाद :

सब से उत्तम कलाम अल्लाह का कलाम है और सब से उत्तम मार्ग मुहम्मद ﷺ का मार्ग है,सब से बुरी चीज़ दीन में घड़ी गई बिदअतें हैं और (दीन में) हर घड़ी गई चीज़ बिदअत है और हर बिदअत गुमराही है और हर गुमराही जहन्नम में ले जाने वाली है।

ए मुस्लमानो!अल्लाह से डरो और उस को सदेव अपना पर्यवेक्षक जानो,उसकी आज्ञाकारी करो और उसके अवज्ञा से बचो,जान लो कि अल्लाह पर ईमान लाने के चार तक़ाज़े हैं: प्रथमःउस पवित्र व सर्वोत्तम हसती के अस्तित्व पर ईमान लाना,द्वितीयःउसके रब होने पर ईमान लाना,तृतीयःउसके अल्लाह होने पर ईमान लाना,चौथाःउसके नाम व विशेषण पर ईमान लाना,इस उपदेश में केवल अल्लाह तआ़ला के अस्तित्व पर चर्चा करंेगे।

पवित्र व सर्वोत्तम अल्लाह के अस्तित्व पर ईमान लाने के प्रत्येक प्रकार के प्राकृतिक,तार्किक,धार्मिक प्रमाण हैं।

रही बात प्रकृति का अल्लाह के अस्तित्व पर प्रमाण होने की तो यह बात जान लेनी चाहिए कि प्रत्येक जीव बेगैर पूर्व सोच एवं शिक्षा के अपने विधाता पर ईमान के साथ ही पैदा होता है,अल्लाह के पुस्तक में इस बात का प्रमाण हैः

(وَإِذْ أَخَذَ رَبُّكَ مِنْ بَنِي آدَمَ مِنْ ظُهُورِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَأَشْهَدَهُمْ عَلَى أَنْفُسِهِمْ أَلَسْتُ بِرَبِّكُمْ قَالُوا بَلَى شَهِدْنَا)

अर्थातः जब आप के रब ने मनु के पीठ से उन के संतान को निकाला और उन से उन ही के प्रति करार लिया कि क्या में तुम्हारा रब नहीं हूं?सब ने उत्तर दियाःक्यों नहीं!हम सब गवाह बनते हैं।

यह आयत इस बात का प्रमाण है कि मनुष्य के स्वभाव में अल्लाह तआ़ला के अस्तित्व पर ईमान लाना दाखिल है,इस स्वभाव के तक़ाज़े से वही व्यक्ति मूंह फेर सकता है जिस का हृदय खारजी प्रभाव से प्रभावित होता है,क्योंकि पैगम्बर सल्लाहु अलैहे वसल्लम का कथन हैःप्रत्येक शिशु प्रकृति पर जन्म लेता है फिर उस के माता पिता उसे यहूदी अथवा ईसाई अथवा मजूसी बना देते हैं‘‘बोखारी 1359

यही कारण है कि हम देखते हैं कि मनुष्य को जब हानी पहुंचता है तो वह अपने स्वभाव अनुसार फौरन पुकार उठता हैःए अल्लाह! पैगम्बर सल्लाहु अलैहे वसल्लम के काल में बहुदेववादी भी अल्लाह तआ़ला के अस्तित्व को स्वीकार करते थे,जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने उन के प्रति फरमायाः

(وَلَئِنْ سَأَلْتَهُمْ مَنْ خَلَقَهُمْ لَيَقُولُنَّ اللَّهُ)

अर्थातः यदि आप उन से पूछें कि उनको किस ने पैदा किया? तो वह निसंदेह यही उत्तर देंगे कि अल्लाह ने। इस बारे में अनेक आयतें हैं।

जहां तक तर्क से अल्लाह के अस्तित्व के प्रमाणित होने की बात है तो यह सत्य है कि उन समस्त पूर्व एवं पश्चात में आने वाले जीवों का कोई न कोई विधाता अवश्य है जिस ने उन्हें पैदा किया,क्योंकि यह असंभव है कि जीव अपने आप जन्म लेले,क्योंकि अनस्तित्व अपने आप को पैदा नहीं कर सकता,क्योंकि वह अपने अस्तित्व से पूर्व अनस्तित्व था,तो वह अपने अलावा दूजे जीव का रचनाकार कैसे हो सकता है?

इसी प्रकार उन जीवों का बेगैर निर्माता के अचानक से अस्तित्व में आना दो कारण से असंभव है।

प्रथम कारणःप्रत्येक घटने वाले वसतु के लिए घटना को अस्तित्व में लाने वाला होना अनिवार्य है,इस पर तर्क और धर्म दोनों साक्ष्य हैं,अल्लाह का कथन हैः

(أَمْ خُلِقُوا مِنْ غَيْرِ شَيْءٍ أَمْ هُمُ الْخَالِقُونَ)

अर्थातःअथवा यह बेगैर किसी पैदा करने वाले के खुद से पैदा हो गए है? अथवा यह खुद पैदा करने वाले हैं?

द्वितीय कारणःउन जीवों का इस बेमिसाल तंत्र,आपसी मेलमिलाप और सबस व मोसबब्ब के मध्य आपसी संबंध के साथ अस्तित्व में आना और संसार के समस्त जीव का आपस में इस प्रकार जूड़ा हुआ होना कि उस में किसी प्रकार का टकड़ाव नहीं,यह इस बात का कठोड़ खंडन करता है कि यह जीव बेगैर किसी निर्माता के अचानक अस्तित्व में आगईं,क्योंकि कि अचानक अस्तित्व में आने वाला वस्तु अपने सत्य अस्तित्व में किसी प्रणाली पर स्थ्रि नहीं होती,तो भला अपनी स्थिरता व विकास की स्थिति में एतना नियमित केसे हो सकता है?अल्लाह तआ़ला के कथन को गौर से सुनेंः

(لَا الشَّمْسُ يَنْبَغِي لَهَا أَنْ تُدْرِكَ الْقَمَرَ وَلَا اللَّيْلُ سَابِقُ النَّهَارِ وَكُلٌّ فِي فَلَكٍ يَسْبَحُونَ)

अर्थातःसूर्य की यह मजाल है कि चॉद को पकड़े और न रात दिन पर आगे बढ़ जाने वाली है,और सब के सब आकाश में तैरते फिरते हैं।

किसी देहाती से पूछा गया कि तुम ने अपने रब को कैसे जाना?

तो उसने उत्तर दियाःमेंगनी ऊूटनी का प्रमाण देती है,लीद गदहे का प्रमाण देती है,पैर के निंशान यात्री के होने का प्रमान देते हैं,तो क्या सितारों से सजे आकाश,चौड़े रास्तों से सजे पृथ्वी,ठाठे मारते समुद्र,सुन्ने और देखने वाले रचनाकार पर का प्रमाण नहीं हैं?

मच्छड़ अल्लाह तआ़ला का एक अजीब जीव है,अल्लाह तआ़ला ने उस के अंदर भी अनेक तथ्यों को छुपा रखा है,अल्लाह तआ़ला ने उस के अंदर स्मरण शक्ति,विचार विमर्श की क्षमता,छूने,देखने और सूंघने की क्षमता प्रदान फरमाई है, उस के अंदर खाना पहूंचने की जगह बनाई है, उसके अंदर पेट, रगें और हडियॉ बनाई हैं,पवित्र है वह हस्ति जिस ने अंदाज़ा किया और फिर मार्ग दिखाया और कोई भी वस्तु बेकार नहीं बनाई।

एक कवी ने अपनी कवीता में यह पंक्तियां लिखी हैं:

يا من يرى مدَّ البعوض جناحها في ظلمة الليل البهيم الأليل

ويرى مناط عروقها في نحرها والمخ من تلك العظام النحّل

ويرى خرير الدم في أوداجها متنقلا من مفصل في مفصل

ويرى وصول غذى الجنين ببطنها في ظلمة الأحشا بغير تمقّل

ويرى مكان الوطءِ من أقدامها في سيرها وحثيثها المستعجل

ويرى ويسمع حِس ما هو دونها في قاع بحر مظلم متهوّل

امنن علي بتوبة تمحو بها ما كان مني في الزمان الأول[1]

अर्थातःए वह पालनहार जो अत्यंत अंधेरे रात में भी मच्छर के पर फेलाने को देखता है।ए वह पालनहार जो इस मच्छर की गरदन में रगों के संगम को देखता है और उस की बारीक हडडीयों पर चढ़े मास को भी देखता हैं। उसकी रगों के अंदर दौड़ रहे रक्त को देखता है जो शरीर के एक भाग से दूसरे भाग की ओर जाता है। जब वह चलता है और तेज़ भागता है तो उस के पैर के रखने के स्थान को भी देखता है,उस से भी अधिक बारीक जीव को देखता और सुनता है जो अंधेरे और भयावक समुद्र की गहराईयों में होता है,ए पालनहार !मेरी तौबा को स्वीकार फरमा और मेरे समस्त पूर्व पापों को क्षमा प्रदान फरमा।

तातपर्य यह कि जब जीव खुद को पैदा नहीं कर सकते और न अचानक बेगैर रचनाकार के अस्तित्व में आ सकते हैं तो यह निश्चित हो गया कि उसका एक रचनाकार अवश्य है,जो कि अल्लाह तआ़ला है।

अल्लाह तआ़ला ने इस तार्किक एवं धार्मिक प्रमाण को सूरह तूर में उल्लेख किया है,अल्लाह का कथन हैः

(أَمْ خُلِقُوا مِنْ غَيْرِ شَيْءٍ أَمْ هُمُ الْخَالِقُونَ)

अर्थातःक्या यह बेगैर किसी पैदा करने वाले के अपने आप पैदा हो गए हैं?अथवा यह खुद पैदा करने वाले हैं?

अर्थातःवह बेगैर निर्माता के नहीं पैदा हूए हैं,और न ही खूद अपने आप को पैदा किये हैं,इस प्रकार ज्ञात हुआ कि उन का रचनाकार अल्लाह तआ़ला हैं।

यही कारण है कि जब ज़ोबैर बिन मुतइम रजिअल्लाहु अनहु ने रसूल सलल्लाहु अलैहि वसल्लम को सूरह तूर की तिलावत करते हूए सुना और आप इन आयात तक पहूंचेः

[1]इन पंक्तिओं को शहाबुददीन अहमद अलअबशही ने अपनि पुस्तक ''अल मुसतरफ फी कुल्ले फन्निन मुसतजरफ पृष्ठ संख्या 347''ने उल्लेख किया है,प्रकाशकःदारुलकुतुब अल इलमिया,बैरूत,प्रकाशनःप्रथम,1413

(أَمْ خُلِقُوا مِنْ غَيْرِ شَيْءٍ أَمْ هُمُ الْخَالِقُونَ أَمْ خَلَقُوا السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ بَلْ لَا يُوقِنُونَ أَمْ عِنْدَهُمْ خَزَائِنُ رَبِّكَ أَمْ هُمُ الْمُصَيْطِرُونَ)

उस समय जोबैर बहुदेववाद थे,उन्होंने कहा:''निकट था कि मेरा हृदय उड़ जाए, यह प्रथम अवसर था जब मेरे हृदय में ईमान ने स्थान बनाई'' ''बाखारी 4853''

अल्लाह तआला मूझे और आप को कुरआन की बरकत से माला माल करे,मूझे और आप सब को उस की आयतों और हिकमतों पर आधारित प्रामर्शों से लाभ पहूंचाए,में अपनी यह बात कहते हुए अल्लाह से अपने लिए और आप सब के लिए छमा प्राप्त करता हूॅ,आप भी उस से छमा प्राप्त करें,निसंदेह वह अति छमा प्रदान करने वाला और कृपा करने वाला है।

द्वितीय उपदेश:

الحمد لله وحده ؑ والصلاة والسلام على من لا نبي بعده، أما بعد:

ए मुसलमानो!रही बात अल्लाह तआला के अस्तित्व के धार्मिक प्रमाण की तो समस्त आकाशीय पुस्तकें इस के प्रमाण हैं,चूंकि यह पुस्तकें एसे आदेशों के साथ अवतरित हूई हैं जो जीव के हित पर आधारित हैं,इस लिए यह इस बात का प्रमाण है कि वह एसे परवरदिगार की ओर से हैं जो हिकमत वाला है और अपने जीव के कलयाण व हित से अवगत है,इसी प्रकार उस के अंदर संसार के एसे समाचार दिए गए हैं कि वास्तव स्थिति इस की पुष्टि करती है,यह भी इस बात का प्रमाण है कि वह एसे परवरदिगार की ओर से है जो हर उस वसतु को पैदा करने पर समर्थ है जिस की उस ने सूचना दी है।

तथा कुरआन का आपसी मेलमिलाप,उस में स्वेच्छाचार का न पाया जाना और उस के बाज भागों का बाज भागों की पुष्टि करना इस बात का ठोस प्रमाण है कि वह हिकमत और ज्ञान वाले प्रवरदिगार की ओर से है,अल्लाह का कथन है:

(أَفَلَا يَتَدَبَّرُونَ الْقُرْآنَ وَلَوْ كَانَ مِنْ عِنْدِ غَيْرِ اللَّهِ لَوَجَدُوا فِيهِ اخْتِلَافًا كَثِيرًا)

अर्थातःक्या ये लोग कुरआन में विचार नहीं करते? यदि यह अल्लाह के अतिरिक्त किसी और की ओर से होता तो इस में अवश्य ही बहुत विरोध पाये जाते।

यह उस हस्ति के अस्तित्व का प्रमाण है जिस ने कुरान के माध्यम से वार्ता किया और वह अल्लाह की हस्ति है।

रही बात अल्लाह तआ़ला के अस्तित्व के हिस्सी प्रमाण की तो इस के दो प्रकार हैं:

प्रथम यह किः हम सुनते और देखते हैं कि अल्लाह तआ़ला पुकारने वालों की पुकार को सुनता और पीड़ितों की सहायता करता है,जो अल्लाह के अस्तित्व की एक ठोस प्रमाण है,क्योंकि प्रार्थना की स्वीकृति से पता चलता है कि एक पालनहार है जो अपने पूकारने वालों की पूकार सुनता और उसे पूरा करता है,अल्लाह तआ़ला का कथन है:

(وَنُوحًا إِذْ نَادَى مِنْ قَبْلُ فَاسْتَجَبْنَا لَهُ)

अर्थातःनूह़ के उस समय को याद कीजिए जबकि उसने इस से पहले प्रार्थना की हम ने उस की प्रार्थना स्वीकार किया।

इस के अतिरिक्त अल्लाह का कथन है:

(إِذْ تَسْتَغِيثُونَ رَبَّكُمْ فَاسْتَجَابَ لَكُمْ)

अर्थातःउस समय को याद करो जब कि तुम अपने रब से फरयाद कर रहे थे,फिर अल्लाह ने तुम्हारी सुन ली।

अनस बिन मालिक रजिअल्लाहु अनहु से वर्णित है कि एक व्यक्ति मिंबर के सामने वाले दरवाजे से शुक्रवार के दिन मस्जिदे नबवी में आया। रसूल सलल्लाहु अलैहि वसल्लम प्रामर्श प्रस्तुत कर रहे थे,उसने भी खड़े खड़े रसूल सलल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहाःया रसूलल्लाह! वर्षा ना होने के कारण से पशू मर गए और रास्ते बन्द हो गए।आप अल्लाह से वर्षा के लिए दूआ फरमा दिजिए।वह कहते हैं कि रसूल सलल्लाहु अलैहि वसल्लम यह कहते ही हाथ उठा दिए। आप सलल्लाहु

अलैहि वसल्लम ने प्रार्थना की:«اللهم اسقنا، اللهم اسقنا، اللهم اسقنا»

हे अल्लाह हमें सैराब कर!हे अल्लाह हमें सैराब कर! हे अल्लाह हमें सैराब कर!

अनस रजिअल्लाहु अनहु ने कहाःअल्लाह की क़सम कहीं दूर दूर तक आकाश पर बादल का कोई टुकड़ा नज़र नहीं आ रहा था और न कोई चीज''हवा आदि जिस से यह बोध हो कि वर्षा होगी'' और हमारे और सिला पहाड़ी के मध्य में कोई स्थान भी न था''कि हम बादल होने के बावजूद न देख सकते हों'' पहाड़ी के पीछे से ढाल के बराबर बादल निकल आया और बीच आकाश तक पहुंच कर चारों ओर फेल गया और वर्षा आरंभ हो गया,अल्लाह की क़सम! हम ने सूर्य एक सप्ताह तक नहीं देखा।फिर एक व्यक्ति दूसरे शूक्रवार उसी दरवाजे से आया,आप सलल्लाहु अलैहि वसल्लम खड़े उपदेश प्रस्तुत कर रहे थे, उस व्यक्ति ने आप सलल्लाहु अलैहि वसल्लम से खड़े खड़े ही संबोधित किया कि या रसूलल्लाह सलल्लाहु अलैहि वसल्लम! र्व्षा के कारण माल व जाएदाद बरबाद हो रहे हैं रासते बंद हो गए हैं,अल्लाह से प्रार्थना किजीए कि वर्षा रुक जाए। फिर आप सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हाथ उठा कर यह दूआ कीः

«اللهم حوالينا ولا علينا، اللهم على الآكام والجبال والآجام والظراب والأودية ومنابت الشجر»

अर्थातः ''या अल्लाह अब हमारे इर्द गिर्द वर्षा भेज हम से इस को रोक दे। टिलों,पहाड़ों,पहाड़ियों,वादियों और बागों को सैराब कर।उन्होंने कहा कि उस प्रार्थना से वर्षा रुक गई और हम निकले तो धूप निकल चूकी थी।''

''बोखारी 1019,मुसलिम 897''

प्रार्थना स्वीकार होने का दृश्य आज भी देखा जा सकता है मगर शर्त है कि सच्चे दिल से अल्लाह से लौ लगाए और प्रार्थना स्वीकार होने के कारण को अपनाए।

द्वितीय प्रकार यह हैःपैगम्बरों की वह निशानियॉ जिसे मोजेज़ात''चमत्कार'' कहते हैं जिनहें लोग देखते या सुनते हैं**,**वह भी उनके भेजने वाले अर्थात अल्लाह तआ़ला के अस्तित्व का ठोस प्रमान है,क्योंकि यह ऐसी चीज़ें हैं जो मनुष्य के बस से बाहर है,उन्हें अल्लाह तआ़ला ने अपने संदेशवाहकों की सहायता के लिए बनाया है।

इसका उदाहरणः मूसा अलैहिस्सलाम की निशानी,जब अल्लाह तआ़ला ने यह आदेश दिया कि वह अपनी लाठी से समुद्र पर दे मारें तो उन्होंने दे मारा,जिस से बारह

सूखे रास्ते निकल पड़े और उन के बीच पानी पहाड़ के जैसे ठहरा था,अल्लाह का कथन है:

(فَأَوْحَيْنَا إِلَى مُوسَى أَنِ اضْرِبْ بِعَصَاكَ الْبَحْرَ فَانْفَلَقَ فَكَانَ كُلُّ فِرْقٍ كَالطَّوْدِ الْعَظِيمِ)

अर्थात: हम ने मूसा की ओर वहय् भेजी कि दरया पर अपनी लाठी मार,और उसी समय दरया फट गया और पानी का हर एक भाग बड़े पहाड़ के जेसा हो गय।

ए मुसलमानो! अल्लाह तआ़ला के अस्तित्व को स्वीकारना एक सवभाविक चीज़ है जिस पर प्रकृति और एहसास दोनों साक्ष्य हैं,इस लिए आप सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने समुदाय से कहा:

(أَفِي اللَّهِ شَكٌّ فَاطِرِ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ)

अर्थात: क्या अल्लाह तआ़ला के प्रति तुम्हें संदेह है?जो आकाश एवं धर्ती का रचनाकार है।

इन सारी बातों का सार यह है कि अल्लाह के अस्तित्व पर ईमान लाना स्वभाव में रची बसी है,तर्क,एहसास और धर्म में एक ज्ञात चीज है,इस का खंडन कोई नास्तिक ही कर सकता है जिस का हृदय सत्य मार्ग से फिर गया हो,अलहमदोल्लिाह एसे लोग कम हैं।

आप यह भी याद रखें—अल्लाह आप पर कृपा करे—कि अल्लाह ने आपको एक बड़े कार्य का आदेश दिया है,अल्लाह का कथन है:

(إِنَّ اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا)

अर्थात: अल्लाह और उसके देवदूत उस पैगम्बर पर रह़मत भेजते हैं,ए ईमान वालो! तुम भी उन पर परामर्श भेजो और अधिक सलाम भी भेजते रहा करो।

अल्लाह तू अपने बंदे व रसूल (दास एवं संदेशवाहक) मोह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दया, कृपा एवं शांति भेज तू उनके

ख़ुलफ़ा (मोह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के उत्तराधिकारीयों) ताबेईन (समर्थक) एवं क़यामत तक आने वाले समस्त आज्ञाकार्यों से प्रसन्न हो जा!

ए अल्लाह! इस्लाम एवं मुसलमानों को सम्मान एवं प्रतिष्ठा प्रदान कर! बहुवाद, एवं बहुवादियों को अपमानित कर दे! तू अपने एवं इस्लाम के शत्रुओं एवं विरोधीयों को नाश कर दे! तू अपने मुवह्हिद बंदों (अव्दैतवादियों) को सहायता प्रदान कर!

ए अल्लाह! तू हमारे देशों को शांतिपूर्ण बना दे, हमारे इमामों (प्रतिनिधियों), शासकों को सुधार दे, उन्हें हिदायत (सही मार्ग) का निर्देश दे, और हिदायत पर चलने वाला बना, ए अल्लाह! तू समस्त मुस्लिम शासकों को अपनी पुस्तक को लागू करने एवं अपने धर्म के उत्थान की तौफ़ीक़ प्रदान कर, उनको उनके प्रजा के लिए रह़मत (दया) का कारण बना दे! ए अल्लाह हमारे प्रति इस्लाम और मुसलमानों के प्रति जो बुराई का भाव रखते हैं, उसे तू अपनी ज़ात में व्यस्त कर दे और उसके फ़रेब व चाल को उलटा उसके के लिए वबाल बना दे!

ए अल्लाह! मुद्रास्फीति, महामारी, ब्याज बलात्कार, भूकंप एवं आज़माइशों को हमसे दूर कर दे और प्रत्येक प्रकार के आंतरिक एवं बाह्य फ़ित्नों (उत्पीड़नों) को हमारे ऊपर से उठा ले सामान्य रूप से

समस्त मुस्लिम देशों से और विशेष रुप से हमारे देश से! ए दोनों जहां के पालनहार! ए अल्लाह! हमारे ऊपर से महामारी को दूर कर दे, नि: संदेह हम मुसलमान हैं.

ए हमारे रब! हमें दुनिया और आख़िरत में हर प्रकार की अच्छाई दे, और नरक की यातना से हम को मुक्ति प्रदान कर!

سبحان ربك رب العزة عما يصفون، وسلام على المرسلين، والحمد لله رب العالمين.

लेखक: माजिद बिन सुलेमान अलरसी

जूबैल-सऊदीअरब।

००९६६०५९९०६७६१

उर्दू अनुवाद: फैज़ुररह़मान ह़िफज़ुररह़मानतैमी